RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

बाल सुरक्षा में परिवार की भूमिका का अध्ययन

वर्षा मक्कड़

शोधार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

प्रस्तावना –

वर्तमान में बालक का मन कम ही ठहरता है, वह बीते हुए कल और आने वाले कल की गलियों में ही ज्यादातर घूमता रहता है। न तो बालक बीते हुए कल में वापस जा सकते हैं और न ही आने वाले कल को तुरंत पा सकते हैं लेकिन यह भी संभव नहीं है कि बालक लंबे समय तक अपने आने वाले कल से भाग सकें, एक न एक दिन बालक का आने वाला कल वर्तमान की दहलीज पर होता है, जिससे बालक रूबरू होते हैं, लेकिन वर्तमान में आने पर बालक उस पर उतना ध्यान नहीं देते और फिर से आने वाले कल की ओर देखने लगते हैं या फिर बीते हुए कल में घूमने लगते हैं। अपनी और अपनों की बेहतरी के लिए आगे की सोचना फायदेमंद है, लेकिन इसके लिए बालक के वर्तमान की अनदेखी करना सही नहीं है क्योंकि वर्तमान ही वह धरातल है जिस पर बालक खड़े हैं और जिस पर चलकर बालक अपने भविष्य की राहें बनाते हैं, और मार्ग तय करते हैं।

देश में बच्चों की सुरक्षा एक बहुत गंभीर मसला बन कर उभर रहा है। कमजोर, लाचार और वंचित बच्चों को शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का सामना आए दिन करना पड़ रहा है। आज बच्चे कहीं भी सुरक्षित नहीं है। पहले माना जाता था कि बच्चों के लिए सबसे सुरक्षित जगह उनका घर होता है लेकिन अनेक अध्ययनों से निकल कर आया है कि घर भी बच्चों की गारंटी नहीं दे सकता है। सरकार के आंकड़ें बताते हैं कि बच्चियों के साथ इस तरह की घटना में ज्यादातर उनके परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, जान पहचान के लोग ही शामिल होते हैं। इन घटनाओं में कुछ तो दर्ज हो पाते हैं, परन्तु बहुत सारी घटनाएँ परिवार के मसले होने, लोकलाज और समाज के कारण सामने नहीं आ पाते हैं। पीड़ित बच्चे को चुप करा दिया जाता है। इन घटनाओं का असर इन बच्चों के मानस पर जिंदगी भर के लिए बैठ जाता है।

परिवार मानव–समाज की मूलभूत इकाई है। वह व्यक्ति के सामान्यीकरण की पहली सीढ़ी है। बालक के जीवन को पारिवारिक वातावरण और विद्यालय वातावरण प्रमुख रूप से प्रभावित करते हैं। पारिवारिक वातावरण के अनुसार बालकों में पारिवारिक गुणों का समावेश होता है। सम्बन्धों के आधार पर बने समूहों में परिवार सबसे छोटी इकाई है। परिवार के अभाव में मानव समाज के संचालन की कल्पना करना भी कठिन प्रतीत होता है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य रहा है या है।

बाल सुरक्षा से सम्बन्धित अधिनियम में इस बात पर बल देता है कि बच्चे एक पारिवारिक माहौल में बढ़े हों और जहाँ तक संभव हो उनके अपने माता–पिता उनकी देखरेख करें अगर परिस्थितियों के कारण यह संभव नहीं हो, तब सारे प्रयास एक अच्छे वैकल्पिक देखरेख के लिए किए जाने चाहिए। लम्बी अवधि की संस्थागत निगरानी को बिना परिवार के बच्चे की देखभाल का सबसे आखिरी उपाय समझा जाना चाहिए।

अध्ययन का महत्व :–

बाल सुरक्षा का महत्व समाज, परिवार एवं घर के निर्माण में सहायक हैं। बाल सुरक्षा व्यक्तिगत रूप से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें व्यक्ति का समाज में स्थान एवं उसका महत्व यह परिलक्षित करता है कि वह बालक किस रूप का होगा। बाल सुरक्षा का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि बालक को किस दिशा में जाना है इस हेतु परिवार अपनी भूमिका अदा करता है।

अच्छी शिक्षा जीवन में बहुत से उद्देश्यों को प्रदान करती है, जैसे – व्यक्तिगत उन्नति को बढ़ावा, सामाजिक स्तर में बढ़ावा, सामाजिक स्वास्थ्य में सुधारख आर्थिक प्रगति, राष्ट्र की सफलता, जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करना, हमें सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक करना और पर्यावरणीय समस्याओं को सुलझाने के लिए हल प्रदान करना और अन्य सामाजिक मुद्दे आदि। शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को बड़े स्तर पर विकसित करती है और समाज में लोगों के बीच सभी भेदभावों को हटाने में मदद करती है। यह हमें अच्छा अध्ययनकर्ता बनने में मदद करती है और जीवन में हर पहलु को समझने के लिए सूझ–बूझ को विकसित करती है। यह सभी मानव अधिकारों, सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्त्तव्यों और दायित्वों को समझने में मदद करती है।

समस्या कथन :–

बाल सुरक्षा में परिवार की भूमिका का अध्ययन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बाल सुरक्षा में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना।

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध में बीकानेर संभाग को चयनित किया गया है।
2. बीकानेर संभाग से माध्यमिक स्तर के बालकों को चयनित किया गया है।
3. माध्यमिक स्तर के कुल 200 बालक–बालिकाओं चयनित किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय–वस्तु से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में यह विधि सर्वथा उपयुक्त, तर्कसंगत एवं उत्तम मानी जाती है। शोध प्रकृत्ति के अनुसार अध्यायों के शीर्षक अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निर्मित किए गए हैं और उनसे सम्बन्धित सम्प्रत्यय एवं तथ्यों का संग्रह किया गया है।

निष्कर्ष निरूपण –

वर्तमान युग में संयुक्त परिवार का स्थान एकाकी परिवारों ने लिया है। उसके अनेक कार्यों को भी सामाजिक संस्थाओं ने संभाल लिया है पर इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वर्तमान के परिवारों पर बालक का लालन–पोषण, बाल सुरक्षाएवं संस्कार निर्माण में परिवार की भूमिका नहीं है अपितु परिवार की भूमिका में बाल सुरक्षा में परिवारों की जिम्मेदारी है और शोध से निष्कर्ष निकला कि बाल सुरक्षा में परिवारों की अहम् भूमिका है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2001) : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'', 23 – भगवान दास मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृ. सं. 43 ।
2. एलिजाबेथ, बी. हर्लोक (1967) : ''विकास मनोविज्ञान, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली'', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण, पृ. सं. 92 ।
3. कपूर, प्रमिला (2001) : ''मैरिज एण्ड द वर्किंग वूमैन इन इण्डिया'', विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 3 ।
4. कुमावत, जगदीश प्रसाद (1977) : ''राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान'', शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर, पृ. सं. 169 ।
5. गैरेसन, काली सी. (1986) : ''साईकॉलॉजी ऑफ एडोल्सेन्ट'', पांचवां संस्करण, प्रेन्टिस हॉल, नई दिल्ली, पृ. सं. 105 ।
6. गैरेसन, हेनरी (1984) : ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, (पंजाब), 8वां संस्करण, हिन्दी अनुवाद, पृ. सं. 98 . 99 ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved